Estd. 1882

जुलाई-सितंबर, 2026

शब्द स्पंदन

प्रथम संस्करण

शब्दों में
सोच की गूँज
और संवेदना की
धड़कन...

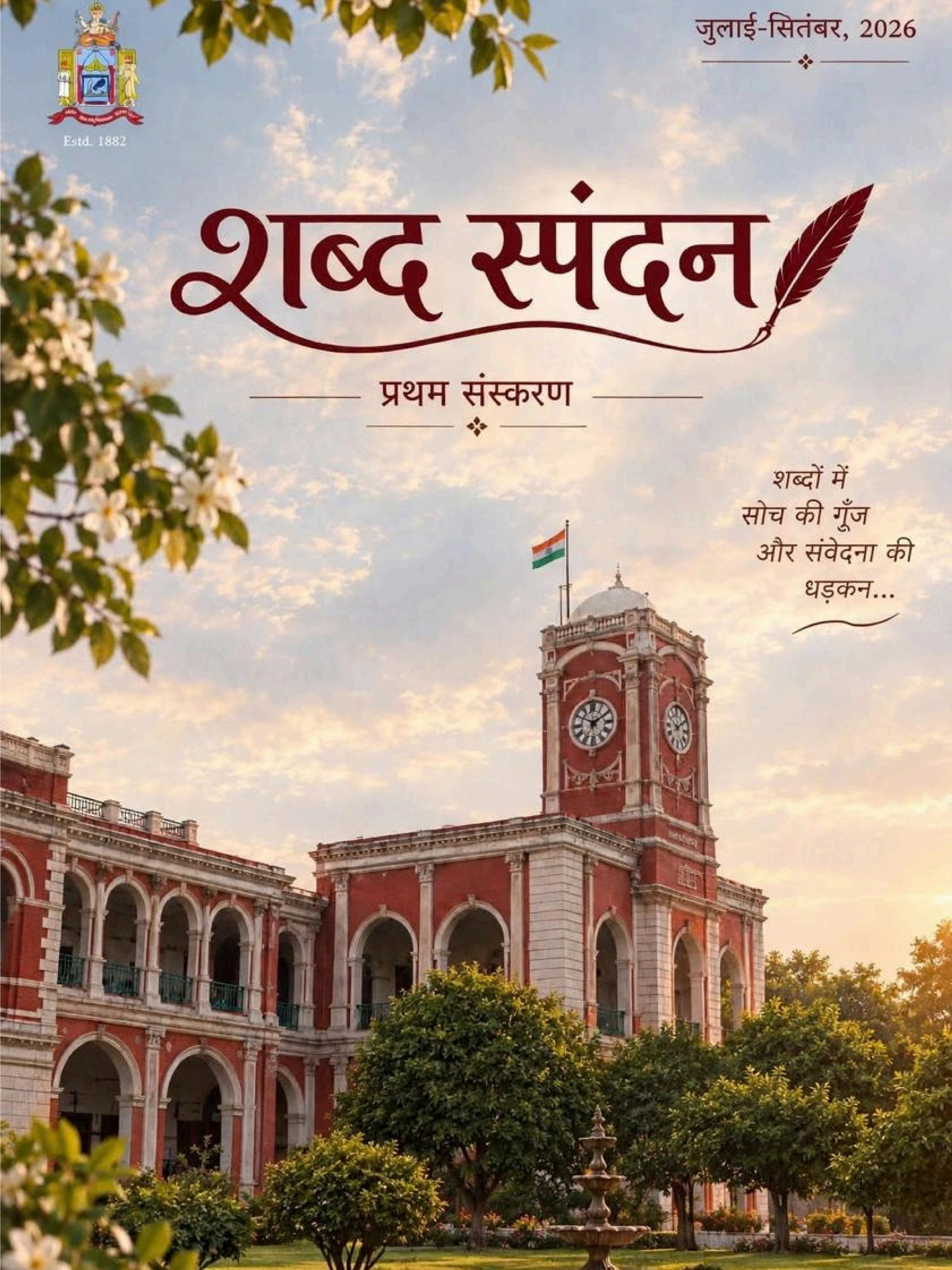

प्राचार्य की कलम से

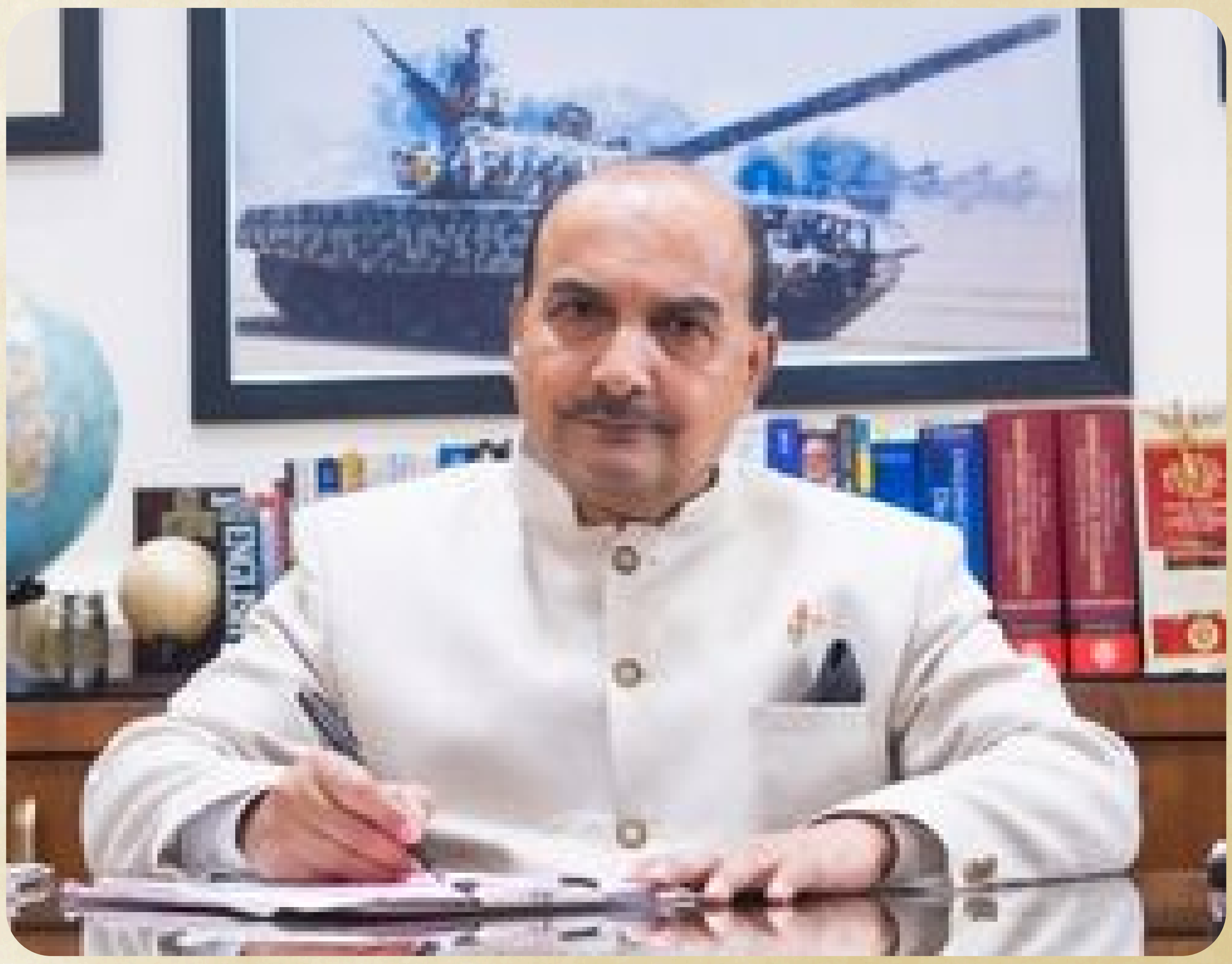

1. शब्द-स्पंदन के लिए आपका क्या सन्देश है ?

'शब्द-स्पंदन' के लिए मेरा यही सदेश है कि यह केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के विचारों, भावनाओं और रचनात्मकता का स्पंदन है। मैं सभी विद्यार्थियों से आह्वान करता हूँ कि हिंदी को केवल एक विषय न समझें, बल्कि उसे जीवनशैली के रूप में अपनाएँ । शुद्ध हिंदी में लिखें, शुद्ध उच्चारण करें और अधिक से अधिक पुस्तकें पढ़ें। यह पत्रिका आपके व्यक्तित्व को एक नई पहचान देगी।

2. आपके अनुसार हिंदी साहित्य का विद्यार्थी जीवन में क्या महत्त्व है ?

हिंदी साहित्य विद्यार्थियों के जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। साहित्य के बिना विद्यार्थी का जीवन अधूरा है। साहित्य हमें संस्कार, नैतिकता और हमारे प्राचीन गौरवशाली इतिहास से जोड़ता है। हिंदी साहित्य का इतिहास बहुत प्राचीन है और यह विद्यार्थियों में कल्पनाशक्ति, सवेदनशीलता और अभिव्यक्ति की क्षमता को विकसित करता है।

3. विद्यालयीन पत्रिकाएँ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में किस प्रकार सहायक हैं ?

विद्यालयीन पत्रिकाएँ विद्यार्थियों के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास में सहायक होती हैं। यह विद्यार्थियों को अपने विचारों को खुलकर व्यक्त करने का मंच प्रदान करती हैं । इससे उनकी लेखन-कला, आत्मविश्वास और रचनात्मक सोच का विकास होता है। जब एक बच्चा अपनी रचना को छपते हुए देखता है, तो उसका मनोबल बढ़ता है और वह भविष्य में और बेहतर करने के लिए प्रेरित होता है।

4. आज के डिजिटल युग में हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए क्या करना चाहिए ?

आज के डिजिटल युग में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हमें साहित्य को नए तरीकों से अपनाना होगा। जैसे हमने विद्यालय की पत्रिका 'शब्द स्पंदन' का शुभारंभ किया है, वैसे ही हिंदी में ब्लॉग, ई-पत्रिकाएँ, ऑडियो कहानियाँ और डिजिटल पुस्तकालयों को बढ़ावा देना होगा। बच्चों में हिंदी टाइपिंग, हिंदी में कहानी लेखन प्रतियोगिताएँ और पुस्तक पठन कार्यक्रमों के माध्यम से रुचि जगानी होगी, ताकि हिंदी केवल किताबों तक सीमित न रहकर तकनीक के साथ आगे बढ़ें।

"साहित्य समाज का दर्पण है।"

संपादक की कलम से

शब्द स्पंदन दो शब्दों से मिलकर बना है—शब्द और स्पंदन।
शब्द = वाणी, ध्वनि, भाषा या अभिव्यक्ति।
स्पंदन = कंपन, हलचल, धड़कन, जीवंत गति या सवेदन।

"शब्द स्पंदन" का शाब्दिक अर्थ है "शब्दों का कंपन या जीवंत धड़कन।" भावात्मक रूप में इसका अर्थ है कि शब्द केवल बोले या लिखे हुए अक्षर नहीं होते, बल्कि उनमें भाव, विचार, ऊर्जा और सवेदना का ऐसा स्पर्श होता है जो मन और हृदय को प्रभावित करता है।

शब्द मानव जीवन का सबसे प्रभावशाली माध्यम हैं। एक मधुर शब्द निराश व्यक्ति में आशा जगा सकता है, जबकि एक कठोर शब्द किसी के मन को आहत कर सकता है। इसलिए कहा जाता है कि शब्दों में जीवन की धड़कन बसती है। यही धड़कन "शब्द स्पंदन" कहलाती है।

साहित्य, कविता, संगीत और भाषण में शब्दों का स्पंदन विशेष रूप से अनुभव किया जाता है। जब कवि अपनी अनुभूतियों को शब्दों में ढालता है, तो वे शब्द पाठक के हृदय में भावों की तरंग उत्पन्न करते हैं। यही शब्दों का स्पंदन है। यह केवल ध्वनि नहीं, बल्कि विचारों, भावनाओं, संस्कारों और चेतना का संचार भी है।

किसी माँ का स्नेहपूर्ण संबोधन बच्चे के मन में सुरक्षा और प्रेम का स्पंदन उत्पन्न करता है।
किसी प्रेरणादायक भाषण के शब्द श्रोताओं में उत्साह और आत्मविश्वास का स्पंदन भर देते हैं।
एक मार्मिक कविता के शब्द पाठक के हृदय को गहराई से स्पर्श करते हैं; यही शब्द स्पंदन की शक्ति है।

"शब्द स्पंदन" का तात्पर्य उन शब्दों की जीवंत शक्ति और भावात्मक ऊर्जा से है, जो मनुष्य के मन, बुद्धि और हृदय में विचार, अनुभूति और परिवर्तन की लहर उत्पन्न करती है। शब्द तभी सार्थक होते हैं जब उनमें सवेदना, सत्य और सकारात्मक चेतना का स्पंदन समाहित हो।

-नैतिक नाहर
प्रधान संपादक

स्पंदन संवाद : विरासत से वाणी तक

महाराजाधिराज डॉक्टर आदित्य प्रताप देव, कांकेर प्रबंध समिति
राजकुमार कॉलेज सोसायटी, रायपुर

राजकुमार कॉलेज की हिंदी पत्रिका 'शब्द स्पंदन' का पहला अंक एक खास शुरुआत है। इसका मकसद है कि विद्यार्थियों में साहित्य के प्रति रुचि बढ़े। मुझे उम्मीद है कि यह पत्रिका हिंदी लेखन को सम्मान दिलाएगी और बच्चों को अपनी लेखन प्रतिभा दिखाने का मौका देगी।

साहित्य सभी विषयों में सबसे ऊपर है। यही हमारी सभ्यता और संस्कृति की पहचान है। भारत में हिंदी की स्थिति थोड़ी अलग रही है - कभी इसे हमारी मुख्य मातृभाषा कहा जाता है, तो कभी इसे थोपा हुआ बताया जाता है। वहीं अंग्रेजी के सामने अक्सर इसे कम समझा जाता है। मेरा मानना है कि जब विद्यार्थी हिंदी साहित्य को समझेंगे और सराहेंगे, तभी हिंदी का सम्मान लौटेगा और उनमें सच्चे संस्कार आएंगे।

स्कूल स्तर की साहित्यिक पत्रिकाएँ विद्यार्थियों को बेहतर बनाती हैं। इससे उनकी भाषा सुधरती है, सौंदर्य की समझ बढ़ती है और मानवीय मूल्यों के साथ उनका व्यक्तित्व निखरता है।

इस डिजिटल युग में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हमें इसे सरल और रोज़मर्रा के उपयोग लायक बनाना होगा। साथ ही हिंदी के अलग-अलग विषयों के शब्दों और किताबों का संग्रह बढ़ाना होगा और ऐसे ऐप्स और प्रोग्राम बनाने होंगे जिन्हें आसानी से इस्तेमाल किया जा सके।

फिर भी हम खुद को आज़ाद कहते हैं

झण्डे लहराते हैं, जोश से भर जाते हैं हम,
पर इस देश की अरबों आवाज़ों के बीच,
फुटपाथ पर एक आवाज़ धीमी पड़ जाती है।
एक वैज्ञानिक, जिसने औरों के लिए जीवन होम किया,
उसका शरीर ही विरोध बना अब बेसहारा, भुला दिया गया।
शब्दों से कहीं ज़्यादा, उसकी ख़ामोशी चीख उठी।
इसी को तो हम आज़ादी कहते हैं।
इसी को तो हम लोकतंत्र कहते हैं।

यही तो विरासत है जो हमें मिली
एक भूख हड़ताल में,
एक इंसान घुलता जाता है, अदृश्य होता जाता है।
जवाबदेही एक विलासिता बन जाती है,
सिर्फ़ ताक़तवरों का विशेषाधिकार।
बुनियादी हक़ महज़ सुझाव रह जाते हैं,
जिन्हें कुर्सी वाले शालीनता से ठुकरा देते हैं।
हम लोकतंत्र की बात यूँ करते हैं जैसे वह पूरा हो चुका,
जैसे काम ख़त्म हो गया,
जैसे लड़ाई जीत ली गई।

जश्न मनाओ, अपनी उपलब्धियों को सराहो,
पर उस बेचैनी को भी महसूस करो जिससे हम कतराते रहे।
समझो कि आज़ादी कोई पुरानी धरोहर नहीं,
बल्कि आज का, हर दिन का फ़र्ज़ है।
वह तुम्हारे फ़ैसलों में है,
वह तुम्हारे कर्मों में है, हर रोज़।
सड़क पर पड़ा वह वैज्ञानिक एक आईना है,
एक आईना जिसका सामना हम नहीं करना चाहते।
पर आईना तो सच दिखाता है।
और सच ही असली आज़ादी की क़ीमत है।

हरसिफ़त कौर - 12 'E'

ध्वनि अग्रवाल - 6 'C'

चैतन बंजारा - 7 'B'

"साहित्य मानवता की वह आवाज़ है, जो समय बदल जाने पर भी अपने विचारों की गूँज बनाए रखती है।"

अंत भला तो सब भला

एक समय की बात है, एक छोटे से गाँव में श्याम नाम का व्यक्ति था। मेहनती था, पर दुनिया की धोखाधड़ी से अनजान था।वह बहुत भोला था। लोग अक्सर उसका फायदा उठाते थे। एक दिन एक व्यापारी जिसका नाम सुरेश था, उसे ठगकर जंगल में छोड़ आया । श्याम भूखा-प्यासा भटकते हुए एक घायल हिरन की मदद करने लगा। बाद में, शिकारी ने श्याम को पकड़ा, पर उस हिरन ने ही बाद में श्याम की जान बचायी। तो शिकारी को उसकी गलती का एहसास हुआऔर उसने श्याम से माफी माँगकर उसे उसके गाँव तक छोड़ा।

जब श्याम गाँव पहुँचा तो लोगों ने कहा कि "तुम ठगे गए, बर्बाद हो गए।" श्याम हँसकर बोला "मैंने किसी का बुरा नहीं किया, अंत में जो मिला वह मेरे अच्छे कर्मों का फल है।" कुछ महीने बाद, वही व्यापारी (जिसका नाम सुरेश था) बीमार होकर लौटा। श्याम ने उसकी सेवा की। सुरेश को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने श्याम से क्षमा माँगते हुए उसका सामान उसे लौटा दिया।

सीख- कर्म अच्छे हो तो अंत में सब भला ही होता है।

सार्थक अग्रवाल - 8 'A'

अता शेख - 9 'I'

हार नहीं मानूँगा

हाँ, नहीं मानूँगा हार जब तक जीत न पाऊँ,
हाँ, नहीं मानूँगा हार जब तक विरोधी को
हरा न पाऊँ।
हाँ, नहीं मानूँगा हार जब तक जीत कर
दिखा न पाऊँ,
हाँ, नहीं मानूँगा हार जब तक अपने माता-
पिता का सिर ऊँचा न कर पाऊँ।
हाँ, नहीं मानूँगा हार जब तक जीत कर
जवाब न दे पाऊँ,
हाँ, नहीं मानूँगा हार जब तक अपने गले में
स्वर्ण पदक न डाल पाऊँ।
हाँ, नहीं मानूँगा हार जब तक देश का नाम
ऊँचा न कर पाऊँ,
हाँ, नहीं मानूँगा हार जब तक जीत न पाऊँ!
भले मुश्किलें आएँगी कई,
पर सामना करूँगा जब तक जीत न पाऊँ।
हाँ, नहीं मानूँगा हार जब तक जीत कर
दिखा न पाऊँ ।

ध्वज संचेती-9 'G'

मेरा स्कूल

मेरा स्कूल जैसे पूरब दिशा की वादियाँ,
चलती रहती पेड़ों पर छोटी बुलबुलों की कहानियाँ।

सुबह शाम चिड़ियाँ चहकतीं,
फूलों से महकती सारी वादियाँ।

सुबह की शुरुआत करतीं चिड़ियाँ चहक-चहक कर,
शाम को पत्ते रास्ते में गिरते बिखर-बिखर कर।

कितना प्यारा मेरा स्कूल,
मेरे नगर का है कमल का फूल।

(कमल का फूल - कमल हमारा राष्ट्रीय फूल है।)

अभ्युदय शर्मा - 7 'B '

सिया टावरी - 9 'F'

दोस्ती

दोस्ती मतलब हँसना,
दोस्ती मतलब साथ,
गिर जाऊँ तो थाम लेना,
देना अपना हाथ।

टिफिन बाँटकर खाना,
कॉपी लेना और देना ,
झगड़ा करके फिर से,
गले से जा लगना।

स्कूल का हर दिन लगे,
एक नया त्योहार,
दोस्त हों तो जिंदगी,
बन जाए उपहार।

चिढ़ाना एक-दूसरे को,
वो नए-नए नाम देना,
पर रह न पाना बिन दोस्तों के,
मन उदास कर लेना।

अधिराज चौबे - 6 'A'

जीवन की बिसात

काले-सफेद खानों में बँटी यह ज़िंदगानी है,
शतरंज के खेल जैसी ही इसकी कहानी है।
सुख-दुःख के दो रंगों में डूबी है यह बिसात,
कि हर सुबह के बाद आती है एक काली रात।

चलनी पड़ती है सोच-समझकर यहाँ हर एक चाल,
पर हार के डर से तू मत होना बेहाल।
कोई भी अपने पहले प्रयास में नहीं जीत सकता,
बाजी हार कर ही यहाँ हर कोई खेलना सीखता ।

शतरंज ही एक ऐसा खेल है जिसमें कोई नहीं हारता,
वह खिलाड़ी या तो जीतता या फिर है सीखता।
कहा है किसी ने खूब कि हारकर ही खिलाड़ी जीतता है ।
तज़ुर्बा नाकामियों से ही मिलता है॥

एक-एक कदम बढ़ाकर आगे जो जाता है,
एक दिन वही छोटा प्यादा वज़ीर बन जाता है।
हार के डर से तू पीछे मत हटाना कदम,
सच्चा खिलाड़ी वही जो खेलता है हरदम।
सच्चा खिलाड़ी वही जो खेलता है हरदम।।

श्रेयांश अग्रवाल 6 'D'

आयुष साहू - 12 ' D'

"साहित्य में शब्द छोटे हो सकते हैं, लेकिन उनके विचारों की शक्ति बहुत बड़ी होती है।"

क्या हमारे स्वतंत्रता सेनानी हम पर गर्व करते हैं ?

क्या हमारे स्वतंत्रता सेनानी हम पर गर्व करते हैं ? असफल होने, सीखने और फिर उठ खड़े होने की आज़ादी हम हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं। तिरंगा फहराते हैं, राष्ट्रगान गाते हैं और उन वीरों को याद करते हैं जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। लेकिन क्या आज हमारे स्वतंत्रता सेनानी हमें देखकर गर्व करते?
उन्होंने हमें केवल स्वतंत्र देश नहीं दिया, बल्कि अपने भविष्य को स्वयं बनाने का अवसर भी दिया। आज हमें अपनी बात कहने, अपने सपने चुनने और अपने जीवन की दिशा तय करने की स्वतंत्रता है। फिर भी हम असफल होने से डरते हैं।

आज सफलता को अक्सर अंकों, नौकरी और उपलब्धियों से मापा जाता है। विद्यार्थी कम अंक आने पर स्वयं को असफल समझ लेता है। कोई नया काम इसलिए नहीं करता कि लोग क्या कहेंगे। लेकिन हमें समझना चाहिए कि असफलता हार नहीं है। यह सीखने और आगे बढ़ने का अवसर है। हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में भी अनेक कठिनाइयाँ और असफलताएँ आईं, लेकिन स्वतंत्रता सेनानियों ने कभी हार नहीं मानी। उन्होंने परिस्थितियों से सीखा और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहे। हमें भी ऐसी पीढ़ी बनना चाहिए जो गलतियों से सीखे, असफलताओं से न डरे और दोबारा प्रयास करने का साहस रखे। स्वतंत्रता केवल अधिकार नहीं, जिम्मेदारी भी है। हमें अपने देश और समाज के लिए भी योगदान देना चाहिए। शायद हमारे स्वतंत्रता सेनानियों को सबसे अधिक गर्व उस युवा पर होगा जो गिरने के बाद कहे—"मैं फिर प्रयास करूँगा।" यही स्वतंत्रता का सबसे सुंदर अर्थ हो सकता है।

शौर्य अग्रवाल - 9'D'

संकष्टी विलास भोसकर -8 'F'

"साहित्य मनुष्य के भीतर संवेदना, करुणा और मानवता के बीज बोता है।"

बचपन के वो पल

एक दिन मैं सोफे पर बैठे हुए इस चिंता में बैठा था कि मेरे कितने अंक आएँगे और अगर अंक कम आए तो सब क्या सोचेंगे। तभी अचानक कोई ज़ोर से चिल्लाया, "भाई रिवाइव दे, रिवाइव दे!" फिर किसी ने चिल्लाया, "पुश कर, पुश कर।" तब मुझे एहसास हुआ कि यह आवाज सामने से आ रही थी, जहाँ कुछ बच्चे मोबाइल में फ्री-फायर खेल रह थे।उन्हें देखकर मुझे बचपन की याद आ गई जब हम कुछ मित्र इकट्ठा होकर गली में क्रिकेट खेला करते थे। मैंने मन ही मन सोचा कि इन बच्चों के पास इतना समय है फिर भी ये उसे मोबाइल में गेम खेलकर व्यर्थ कर रहे हैं। फिर मुझे हमारे सभी किस्से याद आने लगे; जैसे किसी के घर की खिड़की का काँच तोड़ते ही झट अपने-अपने घरों में घुस जाना, पापा से नई क्रिकेट किट मिलने पर सभी मित्रों को चिढ़ाना। मैं सोच ही रहा था तभी मुझे मेरे मित्र ने आवाज़ दी और कहा, "आजा भाई चल क्रिकेट खेलें।"हमें खेलकर ऐसा प्रतीत हुआ मानो हमने फिर से बचपन जी लिया हो और फिर हमने उन बच्चों के कंधे पर हाथ रखकर कहा, "छोटे, स्क्रीन पर जीते गए मैच कभी यादें नहीं बनाते। ये हाथ दौड़ने और चोट खाकर संभलने के लिए बने हैं। मोबाइल की यह डिजिटल दुनिया हमेशा यहीं रहेगी, लेकिन तुम्हारा यह बचपन एक बार गया, तो कभी 'रिवाइव' नहीं होगा।"
शायद हमारी बात उनके दिल को छू गई, क्योंकि अगले ही पल उनके फोन जेब में थे और वे भी एक पुरानी गेंद लेकर दौड़ पड़े थे।

शुभांग देव पाण्डेय - 11 'A'

ज्योतिरादित्य सिंह देव - 10 'G'

मैं और मेरे सपने

घर की लाडली, माँ की दुलारी,
आँखों में सपनों की दुनिया सारी।
घर से निकली हॉस्टल आई,
कुछ हँसी साथ, कुछ यादें लाई।
अब खुद ही गिरना, खुद ही संभलना,
हर मुश्किल में आगे बढ़ना।
सपने बड़े हैं, हौसले भी बड़े,
चाहे रास्ते हों कितने खड़ें।
एक दिन नाम अपना बनाऊँगी,
माँ-बाबा का सिर गर्व से उठाऊँगी।
मैं बस बेटी नहीं,
अपने सपनों की उड़ान हूँ,
आज थोड़ी सी अनजान सही,
कल अपनी पहचान हूँ।

स्वेक्षा अग्रवाल - 10 'F'

वह एक दिन लौटकर जरूर आयेगा

एक दिन शायद मेरा भाई सच में लौटकर आयेगा,
प्यारी यादें वापस ले आयेगा,
मुस्कुराहटें, खुशियाँ और गरम आँसू ,
उन मुस्कुराते चेहरों पर सजी होंगी,
रिश्ते शायद डोरी-डोरी फिर मिल रही होगी।
बचपन में उसका चिढ़ाना जितना बुरा लगता था,
अब उतना ही अच्छा लग रहा है, मुझे उसका घर आना,
इसलिए,कल्पना करती हूँ,
ख्यालों में उसे खूब कोसती हूँ
कि शायद एक दिन मेरा भाई सच में लौटकर आयेगा,
सारी यादें वापस ले आयेगा।
हाँ, थोड़ा परेशान ज़रूर करता हैं,
अपना खाना और मेरा भी नहीं छोड़ता है
पर हाँ प्यार ज़रूर करता है,
इसलिए उसे चिढ़ाने देती हूँ,
फिर दादी से बाद में "डाँट" भी खिलवाती हूँ
लेकिन ये सब तो यादें हैं,
असली मुलाकातें हैं।
जो शायद अब कभी सच नहीं होगी,
वापस वो हँसी नहीं लौटेगी
पर सोचती हूँ ,अभी भी रोज़ सोचती हूँ,
कि शायद एक दिन वह एक सच को झूठ ठहरायेगा
उस बड़े से पीपल पेड़ के सामने वाले श्मशान नहीं,
मुझसे घर पर मिल कर जाएगा।
वो तिरंगे पर लिपटकर नहीं ,
खुद सम्मान की तरह तिरंगा लाएगा
एक दिन मेरा भाई मेरे घर ज़रूरआयेगा
सारी यादें वापस ले आयेगा
मुस्कुराहटें, खुशियाँ और गरम आंसू
सब के चेहरे पर होगी
और ऐसी ही मेरी इच्छा पूरी होगी ,
कि शायद एक दिन मेरा भाई,
मेरे घर मुस्कुराते हुए वर्दी में आएगा।

संजीवनी शुक्ला - 10 'C'

समर्थ अग्रवाल -8 'F'

शब्द चक्र : उत्तर कुंजी

कर, पर, नर, मर, रस, राज, रज, कर्म,
नरम, सरल, कमर, परम, कसर, सर्कस,
कर्ज़, पर्दा, मर्द, कलम, दर्प, ज़रा, जरा,
कला, दुलार, मर्ज़ी, नारी, ...

सुडोकू

5	3			7			9	
6		1	9	5				8
9	8						6	
8			6				3	
4			8		3			1
7				2				6
	6					2	8	
			4	1	9			5
				8			7	9

“साहित्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि जीवन को समझने और बेहतर बनाने का माध्यम है।”

नदी किनारे

बहते पानी में एक सरगम है, धीमी... पर गहरी, सच्ची सी,
शब्द नहीं उसके होंठों पर, फिर भी बात है एक अच्छी सी।

न ही जल्दी उसको, न ठहराव, बस अपना रास्ता ढूँढे जाए,
पत्थर, मिट्टी, धूप या अँधेर, हर हाल में बस बहती जाए।

नदी किनारे बैठो तुम, बस आँखें अपनी मूँद लो,
उसकी धुन में खो जाओ, दिल को खुला छोड़ दो।

कल कल करती वो गुनगुनाए, तुम बस आगे चलते रहो,
जो पीछे गया वो छूट गया, तुम आने वाले कल के रहो।

मुड़ती है, गिरती, फिर उठती, पर कभी न टूटे उसका मन,
छूने में कोमल सी लगे, पर काटदे यही पत्थर का तन।

जहाँ वो जाए, जीवन लाए, हरियाली फिर गुनगुनाए,
पंछी लौटें, हवा भी बोले—देखो, जग फिर मुस्कुराए।

धीरे-धीरे वो सिखलाती अपने शांत से अंदाज़ में—
नरम रहो, पर बढ़ते रहो, यही राज़ है इस राज़ में..

- लव
शिक्षक (भूगोल)

चिड़िया

आँगन में छोटी चिड़िया आए,
चीं - चीं करके सबको जगाए ।
दाना खाए, पानी पी जाए
पंख फैलाकर उड़ती जाए।'

सिया राठी- 7 'B'

सुडोकू: उत्तर कुंजी

5	3	4	6	7	8	9	1	2
6	7	1	9	5	2	3	4	8
9	8	2	3	1	4	6	5	7
8	5	9	7	6	1	4	2	3
4	2	6	8	9	3	7	5	1
7	1	3	5	2	6	8	9	4
1	6	5	9	4	7	2	8	3
2	8	7	4	3	9	5	6	1
3	4	8	2	1	5	7	9	6

अनन्या अग्रवाल - 12 'C'

"साहित्य जीवन का वह साथी है, जो हमें दूसरों को समझने और स्वयं को पहचानने की राह दिखाता है।"

संपादक मंडल

उप-प्राचार्य

श्री शिवेंद्र नाथ शाह देव

शिक्षक समन्वयक

श्रीमती आभा बघेल | **श्रीमती डिंपल खान**

विद्यार्थी

नैतिक नाहर
(प्रधान संपादक)

संपादक

साधना मित्तल | **अनन्या अग्रवाल** | **संजीवनी शुक्ला** | **अक्ष अग्रवाल**